लोकतंत्र की आत्मा है - संवाद

हरियाणा संवाद

पाक्षिक 16-31 दिसंबर 2021 www.haryanasamvad.gov.in अंक -32

"विहाय कामान् यः कर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकार स शांतिमधिगच्छति।।

: श्रीमद्भागवत गीता

हर परिवार को रोजगार देने का संकल्प अंत्योदय मेले

3

कृषि उत्पाद खरीदने खेत में पहुंच रही कंपनियां

6

जागरूक नारी, शक्ति हमारी

8

ओम जय गंगे माता...

विशेष प्रतिनिधि

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ड्रीम प्रोजेक्ट काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का लोकार्पण किया। श्री मोदी ने इस अवसर पर कहा कि देश की शक्ति और भक्ति के आगे कोई चुनौती नहीं टिक सकती। हर भारतवासी के अंदर वह सामर्थ्य और तप शक्ति है जिससे वह बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना कर सकता है। नया भारत अपनी संस्कृति पर गर्व और सामर्थ्य पर भरोसा करना सीख गया है।

प्रधानमंत्री ने अपने ट्वीट में लिखा- 'काशी की गंगा आरती हमेशा अंतर्मन को नई ऊर्जा से भर देती है।'

मुख्यमंत्री मनोहरलाल विशेष रूप से इन यादगार आध्यात्मिक लम्हों का हिस्सा बने। वे लोकार्पण के बाद संध्याकालीन गंगा आरती देखने के लिए क्रूज से घाट तक पहुंचे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्वयं यहां के दृश्यों का वीडियो बनाया। उन्होंने वाराणसी में संध्या आरती के दृश्यों को अद्भुत नजारा बताया। रोमांच कर देने वाले खुशगवार माहौल से मुख्यमंत्री मनोहर लाल इतने उत्साहित हुए कि उन्होंने इन नज़ारों की लाइव कमेंटरी शुरू कर दी। उन्होंने कहा 'गंगा जी के घाट पर ठंडी-ठंडी हवा चल रही है, कितना सुहावना दृश्य है। दीपमाला और दीयों से वाराणसी की दीवारें जगमगा रही हैं। यहां का अद्भुत नजारा देखते हुए ही बनता है। दीपमाला की शृंखला अविस्मरणीय नज़ारा पेश कर रही हैं।'

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने अपने एक ट्वीट में कहा कि 'मां गंगा के तट पर बसी पौराणिक नगरी काशी युगों-युगों से हमारी सनातन संस्कृति, आध्यात्मिकता, प्राचीनता और परंपरा की संवाहक रही है। भव्य व दिव्य काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण कर श्री नरेंद्र मोदी ने धर्म परायणता का परिचय देते हुए एक ऐतिहासिक स्वर्णिम अध्याय रचा है।'

ओम जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता,
चंद्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पडें जो तेरी, सो नर तर जाता,
ओम जय गंगे माता..,
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता,
ओम जय गंगे माता..,
एक ही बार जो तेरी, शारणागति आता ।
यम की त्रास मिटा कर, परमगति पाता,
ओम जय गंगे माता..,
आरती मात तुम्हारी, जो जन नित्य गाता ।
दास वही सहज में, मुक्ति त को पाता,
ओम जय गंगे माता.., श्री जय गंगे माता ।

गीता जयंती महोत्सव

गीता के उपदेश आज भी पूरी तरह प्रासंगिक हैं और यह हरियाणा का सौभाग्य है कि कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर ही 5158 वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के उपदेश दिए।

हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारु दत्तात्रेय ने कहा कि भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए पवित्र ग्रंथ गीता से ही प्रेरणा मिलेगी, इस पवित्र ग्रंथ से पूरी मानवता को शांति का संदेश दिया गया। यह ग्रंथ किसी एक जाति या धर्म का नहीं है, अपितु यह ग्रंथ हर वर्ग और हर व्यक्ति के लिए है।

राज्यपाल ने कहा कि इस गीता जयंती महोत्सव से सांस्कृतिक, अध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने का एक मार्ग मिलता है। विश्व गुरु भारत प्रदर्शनी में दर्शाया गया है कि किस प्रकार सेना अधिकारियों, वैज्ञानिकों और हर क्षेत्र में कार्य करने वाले महान लोगों को विश्व गुरु भारत की प्रेरणा मिलेगी।

स्वामी ज्ञानानंद ने कहा कि पवित्र ग्रंथ गीता में प्रत्येक मानव की समस्या का समाधान है। इस ग्रंथ के उपदेशों से पूरी मानवता का कल्याण संभव है। इस पवित्र ग्रंथ के उपदेशों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से ही मुख्यमंत्री मनोहर लाल के प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव को एक बड़ा स्वरुप दिया गया है। कुरुक्षेत्र में 9 से 14 दिसंबर तक गीता जयंती समारोह आयोजित किया गया जिसमें देश विदेश से कलाकारों ने सांस्कृतिक रंग बिखेरे।

बदलेगी एनसीआर की सूरत

दिल्ली-एनसीआर का दायरा घटाया जा सकता है। फिलहाल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र लगभग 150 से 175 किमी तक फैला है। लेकिन अब एनसीआर ड्राफ्ट रीजनल प्लान 2041 के तहत इसे घटाकर 100 किमी किया जा सकता है। इस 100 किमी के इलाके में लीनियर कॉरिडोर, एक्सप्रेसवे, राष्ट्रीय राजमार्ग, क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम और तेज गति के रेल नेटवर्क को स्थापित करने की योजना है।

नए प्लान के अनुसार इस 100 किमी के परिसीमन में आंशिक रूप से आने वाली तहसीलों को शामिल करने या छोड़ने का निर्णय संबंधित राज्य सरकारों पर छोड़ दिया जाएगा। सुझावों और आपत्तियों के लिए एक विस्तृत मसौदा योजना जल्द ही सार्वजनिक की जाएगी और उसके बाद, इसे एनसीआर योजना बोर्ड द्वारा अधिसूचित किया जाएगा। एनसीआर प्लानिंग बोर्ड ने शहरों के बीच बेहतर संपर्क कायम करने के लिए ड्राफ्ट रीजनल प्लान-2041 को मंजूरी दे दी है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड (एनसीआरपीबी) की बीते दिनों हुई बैठक में इस ड्राफ्ट प्लान को मंजूरी दी गई। बैठक में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल, दिल्ली के शहरी विकास मंत्री सत्येंद्र जैन, राजस्थान के शहरी विकासमंत्री शांति कुमार धारीवाल, उत्तर प्रदेश खादी ग्रामोद्योग और एमएसएमई मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह के अलावा कई वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया। रीजनल प्लान - 2041 का जोर एनसीआर के शहरों को स्मार्ट संपर्क वाले क्षेत्र में बदलने पर है, जिसमें बुलेट ट्रेन, हेलीटैक्सी सेवा और स्मार्ट सड़कें होंगी और क्षेत्र को आर्थिक रूप से संपन बनाया जाएगा और यहां की पूरी आधारभूत संरचना नागरिक केंद्रित होगी।

बोर्ड इस ड्राफ्ट में तय प्रक्रिया के तहत लोगों की राय के अनुसार जरूरी बदलाव करने के बाद ड्राफ्ट का अंतिम रूप मार्च 2022 तक बोर्ड से स्वीकृत करवा लेने के पक्ष में है। एनसीआरपीबी की वेबसाइट पर उपलब्ध इस प्लान के मुताबिक सात मेट्रो केंद्रों- फरीदाबाद-बल्लभगढ़, गुड़गांव-मानेसर, गाजियाबाद-लोनी, नोएडा, सोनीपत-कुंडली, ग्रेटर नोएडा और मेरठ बनाए जाने का

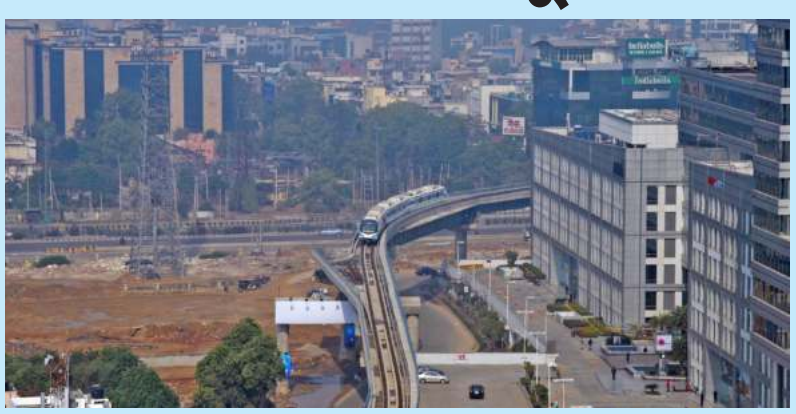

प्रस्ताव है। इसके अलावा 11 क्षेत्रीय केंद्रों- बहादुरगाह, पानीपत, रोहतक, पलवल, रेवाड़ी-धारूहेड़ा-बावल, हापुड़-पिलखुआ, बुलंदशहर-खुर्जा, बागपत-बड़ौत, अलवर, ग्रेटर भिवाड़ी और शाहजहांपुर-नीमराना-बहरोड़ की भी पहचान की गई है।

ड्राफ्ट में कहा गया है कि पूरे एनसीआर में यात्रा का समय घटाना महत्वपूर्ण है और इसके लिए ये तय किया गया है कि तेज रफ्तार बुलेट ट्रेन या हेलीटैक्सी से एक से दूसरे शहर में 30 मिनट के अंदर, दूसरी ट्रेनों से 60 मिनट के अंदर और दो से तीन घंटे के अंदर कार से पहुंचा जा सके। ड्राफ्ट में इलेक्ट्रिक परिवहन ढांचे को बढ़ावा देने की भी योजना है।

एनसीआरपीबी में पूरी दिल्ली, उत्तर प्रदेश के आठ जिले, हरियाणा के 14 जिले और राजस्थान के दो जिलों को शामिल किया गया है। कुल मिलाकर बोर्ड के दायरे में 55,083 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र आता है। बोर्ड की योजना है कि इस पूरे क्षेत्र को हेलीटैक्सी से जोड़ा जाए ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिल सके। इसके आलावा ईस्टर्न और वेस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे के अलावा नए ड्राफ्ट में दो और एक्सप्रेस-वे के निर्माण की योजना बनाई गई है। पहले सर्कुलर एक्सप्रेस-वे के जरिये पानीपत-शामली-मेरठ-जेवर-नूह-भिवाड़ी-रेवाड़ी-झज्जर-रोहतक-पानीपत और दूसरे एक्सप्रेस-वे के जरिये करनाल-मुजफ्फरनगर-गढ़मुक्तेश्वर-नरौरा-अलीगढ़-मथुरा-डीग-अलवर-महेंद्रगढ़-चरखी दादरी-भिवानी-कैथल-करनाल को जोड़ा जाएगा। एनसीआर प्लान का अनुमान है कि एनसीआर की आबादी 2031 तक 7 करोड़ और 2041 तक 11 करोड़ पहुंच सकती है।

-संवाद ब्यूरो

संपादकीय

अद्भुत गीता-महोत्सव

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2021 में इस बार ब्रह्मसरोवर के घाटों पर देश की लोक संस्कृति का महाकुंभ देखने को मिला। इस लोक संस्कृति के महाकुम्भ में उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, असम, गुजरात, सिक्किम, झारखंड, मणिपुर, बिहार, मध्यप्रदेश,पश्चिमी बंगाल, राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, पंजाब के कलाकारों ने अपने-अपने प्रदेश के लोकनृत्य की प्रस्तुति देकर समां बांध दिया। इन कलाकारों को उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक कला क्षेत्र पटियाला की तरफ से आमंत्रित किया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2021 में सरस और शिल्प मेले में शिल्प कलाओं के साथ-साथ देश की लोक संस्कृति को देखने का एक एक बार सुनहरा अवसर पर्यटकों को मिला। इस वर्ष कोरोना महामारी के बाद बड़े स्तर पर महोत्सव का आयोजन किया गया। पिछले वर्ष कोरोना महामारी के कारण शिल्प और सरस मेले के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन नहीं हो पाया था इसलिए इस वर्ष महोत्सव के शिल्प और सरस मेले के साथ-साथ लोक संस्कृति का आनन्द लेने के लिए ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर देश के कोने-कोने से पर्यटक पहुंचे। इस वर्ष उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक कला केंद्र की तरफ से करीब 15 राज्यों के 400 कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। इनमें से पांच राज्यों के कलाकार 19 दिसम्बर तक अपनी प्रस्तुति देंगे।

हरियाणा पैवेलियन, पर्यटकों को अपनी ओर खींच रहा था। यहां पहुंचने वाले पर्यटक बज रही बीन की धुन पर झूम रहे थे। इसके साथ-साथ पर्यटकों को हरियाणवी संस्कृति को जानने का मौका भी मिल रहा था।

इस पैवेलियन में अलग-अलग स्थानों पर हरियाणवी रहन-सहन, खानपान, परिधान, खेलकूद को प्रदर्शित किया गया है। पारंपरिक वेशभूषा, दामण-कुर्ती में बैठी महिलाएं दूध बिलौनी में मक्खन निकालती हुई नज़र आईं। पैवेलियन में पहुंचने वाले युवा पर्यटक बड़ी उत्सुकता से दही बिलौनी को देखते रहे और उसके बारे में जानकारी लेते थे। पैवेलियन में हरियाणवी ताऊ-ताई के परिधान के कटआउट लगाए गए, जिसके पीछे खड़े होकर पर्यटक तस्वीरें ले रहे थे। पुस्तक प्रदर्शिनियां भी विशेष आकर्षण का केंद्र बनी रहीं।

- डा चंद्र त्रिखा

नेत्रहीन अधिकारियों को दिए जाएंगे ब्रेल प्रिंटर

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस पर दिव्यांगजनों को तोहफ़ा देते हुए हर जिले के एक स्टेडियम में दिव्यांग खेल कॉर्नर बनाने की घोषणा की है। इसके साथ-साथ उन्होंने राजकीय अंध विद्यालय, पानीपत की नई बिल्डिंग बनाने और नेत्रहीन अधिकारियों को ब्रेल प्रिंटर दिए जाने की भी घोषणा की। इस दौरान उन्होंने विशेषतः दिव्यांगजनों के लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की वेबसाइट और दिव्यांग अवॉर्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के लिए पोर्टल भी लॉन्च किया। इस कार्यक्रम में अंबाला से हरियाणा के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज और सामाजिक एवं अधिकारिता राज्यमंत्री श्री ओमप्रकाश यादव भी जुड़े।

अक्षम लोगों की देखभाल

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि दिव्यांगजनों में भी कोई न कोई विशेष गुण होते हैं। इसका उदाहरण दिव्यांगजनों ने पैरालंपिक खेलों में मेडल जीतकर दे दिया है। सूरदास नेत्रहीन होते हुए भी महाकवि कहलाए। इसी तरह लुई ब्रेल ने नेत्रहीन होते हुए भी ब्रेल लिपि तैयार की, हेलेन केलर मूकबधिर व नेत्रहीन होने पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। मुख्यमंत्री ने कहा कि मानसिक रूप से अक्षम लोगों की देखभाल के लिए अंबाला में 5 एकड़ भूमि पर 31 करोड़ 71 लाख रुपए की लागत से आजीवन दिव्यांग देखभाल गृह का निर्माण किया जाएगा। इसमें 100 दिव्यांगजनों के लिए वस्त्र, भोजन व उनकी उचित देखभाल की पूरी व्यवस्था होगी।

दिव्यांगजनों के लिए अवॉर्ड पोर्टल

उन्होंने कहा कि देश में करीब 50 लाख मानसिक अक्षम हैं, हरियाणा सरकार ज्यादा से ज्यादा ऐसे लोगों के लिए व्यापक स्तर पर सुविधाएं देने के प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब दिव्यांगजन स्टेट कमिशनर फॉर डिसेबलिटीज पोर्टल पर अपनी शिकायतें दर्ज़ करवा सकते हैं। पोर्टल पर ही अपनी शिकायत को ट्रैक करने के साथ-साथ अधिनियम सूचना विभाग की योजनाएं व मामला सूची विधि व्यवस्था की जानकारी ले सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने दिव्यांगजनों के लिए अवॉर्ड पोर्टल की भी शुरुआत की। इस पोर्टल पर दिव्यांगजन सीधे अलग-अलग श्रेणी की अवॉर्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इससे भी उन्हें काफ़ी सहूलियत मिलेगी, उन्हें विभाग के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। उन्होंने कहा कि श्रेणी-1 एवं 2 के नेत्रहीन अधिकारियों को ब्रेल प्रिंटर दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि दिव्यांगजनों के लिए सरकार व्यापक स्तर पर काम कर रही है, इनके लिए एनजीओ व अन्य सामाजिक संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए, ताकि दिव्यांगजनों में आत्मविश्वास जगे और वे आगे बढ़ सकें।

डॉक्टरों को वट वृक्ष पुरस्कार

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग भवेत

डाक्टर, मरीज की नजरों में भगवान के समान होता है। बीमारी के दौरान मरीज की मनोस्थिति ऐसी हो जाती है कि वह स्वयं को डॉक्टर के हवाले छोड़ देता है। डॉक्टर भी मरीज को बचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता, वह हर हाल में उसे दुरुस्त करने का प्रयास करता है। डॉक्टर की इसी सेवा भाव को सम्मान देने के लिए वर्तमान सरकार ने बुजुर्ग डाक्टरों के लिए सम्मान योजना आरम्भ की है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल व स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने पंचकूला के सेक्टर-5 स्थित इंद्रधनुष ऑडिटोरियम में 75 वर्ष से अधिक आयु के 90 डॉक्टरों को 'वट वृक्ष पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

हरियाणा मेडिकल काउंसिल के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सम्मान पाने वालों में सबसे अधिक 92 वर्ष आयु के सिरसा के डॉक्टर आरएस सांगवान भी शामिल थे।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश में डॉक्टरों की मांग को पूरा करने के लिए हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज खोलने की प्रक्रिया जारी है। हर वर्ष 2,500 डॉक्टर तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है और इसके लिए एमबीबीएस की सीटें बढ़ाकर 1,685 की गई हैं जो 2014 में 700 थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी के डॉक्टरों को पुरानी पीढ़ी के डॉक्टरों से मानवता की सेवा करने की भावना से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में निजी व सरकारी क्षेत्र दोनों को मिला कर डॉक्टरों की संख्या लगभग 13-14 हजार है जबकि यूएनओ के मानदंडों के अनुसार 1,000 की जनसंख्या पर एक डॉक्टर होना चाहिए। यदि हम हरियाणा की जनसंख्या 2021 में 2.70 करोड़ मान कर चलते हैं तो 27 हजार डॉक्टरों की आवश्यकता है। इस मांग को पूरा करने के लिए हर वर्ष 2,500 डॉक्टर तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार से भी मेडिकल क्षेत्र में सहयोग मिल रहा है। झज्जर जिला के बाढ़सा में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान स्थापित किया गया है। इसके अलावा रेवाड़ी में एम्स तथा पंचकूला में आयुर्वेद का एम्स बनाने की प्रक्रिया जारी है। पंचकूला के लिए 25 एकड़ ज़मीन केंद्र सरकार को सौंप दी गई है। मुख्यमंत्री ने हरियाणा मेडिकल काउंसिल द्वारा व्योवृद्ध डॉक्टरों को सम्मानित करने लिए चुने गए शीर्ष वाक्य 'वट वृक्ष' की सराहना की। वट वृक्ष पर्यावरण को भी सुरक्षित रखता है। हरियाणा सरकार ने भी 75 वर्ष से अधिक आयु वाले पेड़ों की देखभाल के लिए 2,500 रुपए वार्षिक की पेंशन योजना शुरू की है। जीव व वनस्पति दोनों की दीर्घायु हो तभी हम 'सर्वोभवंति सुखिनः सर्वोभवंति निरामया' के भाव को पूरा कर सकते हैं।

ऑक्सीजन के मामले में आत्मनिर्भरता

स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा कि कोरोना की दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन की कमी महसूस की गई, परंतु मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पूरी तत्परता से पहल की और इसका समाधान किया। उन्होंने कहा कि अब आदेश जारी किए गए हैं कि 50 बेड से अधिक के अस्पताल चाहे वह सरकारी हों या निजी, सभी को ऑक्सीजन आपूर्ति के लिए पीएसए प्लांट लगाना अनिवार्य होगा।

हरियाणा पहला राज्य है जहां हर जिले के नागरिक अस्पताल में कोरोना टेस्टिंग के लिए आरटीपीसीआर लैब स्थापित की जा रही हैं। वर्तमान में हमारे पास 18 जिलों में आरटीपीसीआर लैब हैं क्योंकि इस बीमारी से पार निकलने के लिए टेस्टिंग बहुत जरूरी है और हम 22 जिलों में आरटीपीसीआर लैब स्थापित करेंगे।

संवाद ब्यूरो

सलाहकार संपादक : डा. चंद्र त्रिखा
सह संपादक : मनोज प्रभाकर
संपादकीय टीम : संगीता शर्मा, सुरेंद्र मलिक
संपादन सहायक : सुरेंद्र बांसल
चित्रांकन एवं डिज़ाइन : गुरप्रीत सिंह
डिजिटल सपोर्ट : विकास डांगी

प्रदेश के 6,042 गांवों में अभी तक ड्रोन से मैपिंग का काम पूरा हो चुका है। कुछ गांव अभी शेष बचे हैं, इनमें भी जल्द से जल्द ड्रोन मैपिंग का काम पूरा करने के लिए निर्देश दिए हैं।

प्रदेश में अभी तक 6,309 गांवों में 11 लाख 65 हजार 593 प्रॉपर्टी कॉर्ड बनाए जा चुके हैं। रोहतक, करनाल, कुरुक्षेत्र और महेंद्रगढ़ में एक लाख से ज्यादा प्रॉपर्टी कॉर्ड बनाए गए हैं। जहां-जहां काम पूरा हो चुका है।

मनोज प्रभाकर

हर परिवार को रोजगार देने का संकल्प

अंत्योदय मेले

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना गरीब परिवारों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में मील का पत्थर साबित होगी। परिवार पहचान पत्र योजना के तहत एक लाख रुपए से कम आय वाले लगभग एक लाख 50 हजार परिवारों में उद्यमता की भावना बढ़ाने व स्वरोज़गार से जोड़ने के साथ-साथ सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों का लाभ देने के लिए खण्ड स्तर पर अंत्योदय ग्राम उत्थान मेलों का आयोजन किया जा रहा है। इसके प्रथम चरण में 29 नवंबर से 25 दिसंबर सुशासन दिवस तक 180 स्थानों पर मेलों में प्रदेश भर के युवाओं की इच्छानुसार व्यवसाय चयन करने का मौका दिया जायेगा।

मेलों के पहले चरण में जिन परिवारों की वार्षिक आय एक लाख से कम है उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से ही इस योजना को लागू किया गया है ताकि ऐसे परिवारों के जीवन में सुधार किया जा सके। ऐसे परिवारों को चिन्हित कर उन्हें सूचना के माध्यम से मेले में आमंत्रित किया गया है। इन मेलों के लिए 17 ऐसे विभाग चिन्हित किए गए हैं जो गरीबों के उत्थान व सामाजिक विकास के लिए योजनाएं चलाते हैं। इसी प्रकार से लगभग 20 बैंक हैं, जो स्वरोजगार के लिए ऋण देने का कार्य करते हैं।

अंत्योदय मेले में ऐसे सभी विभागों व बैंकों के स्टाल लगाए गए और लगाए जा रहे हैं। मेले में आने वाले लोगों का रजिस्ट्रेशन किया गया। उसके उपरांत उन्हें परामर्श देने के लिए काउंटर पर भेजा गया।

अधिकारियों व कर्मचारियों ने उनकी रुचि के अनुसार रोज़गार की योजनाओं की जानकारी दी। गौरतलब है कि मेलों के माध्यम से पात्र परिवारों को उनकी रुचि के अनुसार आय बढ़ाने का जरिया उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जा रहा है।

लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने के साथ-साथ सरकार की कल्याणकारी नीतियों का लाभ पंक्ति में अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने के लिए इन अंत्योदय ग्राम उत्थान मेलों का आयोजन किया जा रहा है। युवाओं को उद्यमिता के लिए प्रेरित और सशक्त बनाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि इन मेलों में लाभार्थियों की अधिक से अधिक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए मेलों से एक दिन पहले व्यक्तिगत परामर्श के लिए प्रत्येक पात्र परिवार के घर-घर जाएं। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि इन मेलों में आने के लिए संदेश सबसे पहले परिवार के युवा सदस्यों को भेजा जाए, उसके बाद 60 वर्ष से कम आयु के सदस्यों, तत्पश्चात 60 वर्ष आयु या इससे ऊपर के सदस्यों को भेजा जाए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर परिवार के युवा सदस्य इन मेलों में भाग लें।

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना के पात्र परिवारों की पहचान के लिए विशेष अभियान लांच किया गया जिसमें सवा तीन लाख परिवारों की आय एक लाख रुपए से कम है ऐसे डेढ़ लाख परिवारों की व्यक्तिगत जानकारी ली गई। प्रत्येक जिले के जारी शेडयूल अनुसार दो या तीन दिन तक लगने वाले इन अंत्योदय ग्राम उत्थान मेलों में व्यापक स्तर पर व्यवसाय व स्वरोजगार के लिए पात्र परिवारों का चयन किया जायेगा। इसके लिए प्रदेश को 272 जोन में बांटा गया है तथा प्रत्येक जोन पर एक नोडल अधिकारी लगाया गया है।

परिवार पहचान पत्र के आधार पर डाटा तैयार

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना में परिवार पहचान पत्र (पीपीपी) से सत्यापित डेटा प्राप्त किया गया है और इसके आधार पर राज्य के गरीब परिवारों की पहचान की गई । इस योजना में शिक्षा, कौशल विकास, मजदूरी, स्वरोजगार और रोजगार सृजन के अन्य उपायों का एक पैकेज बनाया गया है। योजना का लक्ष्य शुरू में परिवार की वार्षिक आय कम से कम 1 लाख रुपए और बाद में 1.80 लाख रुपए करना है। राज्य में इस योजना के क्रियान्वयन के लिए राज्य स्तरीय टास्क फोर्स और जिला स्तरीय टास्क फोर्स का गठन किया गया है।

स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहन

योजना का लक्ष्य पंक्ति में खड़े अंतिम परिवार को आगे लाना है इसके लिए 42 योजनाएं चिन्हित की गई हैं जो इन परिवारों की आमदनी बढाने में मददगार होंगी। इनमें पात्रता के लिए एससी,बीसी, महिला, दिव्यांग को प्राथमिकता दी जायेगी। स्वरोजगार के लिए कृषि, मत्स्य, पशुपालन व डेयरी जैसे व्यापारिक, औद्यौगिक क्षेत्रों में व्यवसाय के साथ-साथ स्किलिंग में निपुण करने के लिए कम्प्यूटर, चालक, सिलाई, कढ़ाई आदि के प्रशिक्षण भी शामिल हैं।

बैंकों का पूरा सहयोग

अभियान के पहले चरण में 50,000 से एक लाख रुपए वार्षिक आय तक के परिवारों को आय दोगुनी तक लेकर जाना है इसके लिए बैंकों का पूरा सहयोग लिया जायेगा। मेले के दौरान ही बैंक अधिकारी लोन संबंधी औपचारिकताएं पूरी कर रहे हैं। किसी पात्र व्यक्ति को बैंक गारंटी की आवश्यकता होती है तो सरकार द्वारा उसकी मदद की जाती है। इन मेलों में फार्म जमा कराने के डेस्क भी स्थापित किये गये हैं। दूसरे चरण में जनवरी माह के दौरान इन अंत्योदय ग्राम उत्थान मेलों में मंजूर किये गये ऋण वितरित कर कार्य को अंतिम रूप दिया जायेगा। इस प्रकार सेवाभाव से कार्य करते हुए हर किसी की कठिनाई दूर करके सरकार उनके लिए आमदनी दोगुनी करने के साधन मुहैया करवाने के लिए तत्पर है।

सार्थक होता आजादी का अमृत महोत्सव

आजादी के बाद गरीबी उन्मूलन के नाम पर अनेक योजनाएं आई और बंद हो गई, गरीबी जस की तस रही। इस दौरान सरकारों की ओर से प्रति व्यक्ति आय का बार-बार उल्लेख भी हुआ। यह उल्लेख असल में असल गरीबों तक पहुंचा ही नहीं, कहीं पहुंचा तो उन्होंने इस उल्लेख को किसी अन्य संदर्भ में लिया और जाने दिया। अपनी ओर से इस बारे में कोई टिप्पणी तक नहीं की। कहना गलत न होगा कि प्रदेश में आज भी हर वर्ग में अनेक परिवार ऐसे हैं जिनकी चिंता दो जून की रोटी तक है।

हरियाणा की वर्तमान मनोहर सरकार ने इस पहलू को समझा, परखा और इस दिशा में मजबूती के साथ कदम भी बढ़ा दिया। किसी गरीब परिवार को एक बार कुछ मदद देने से उसकी गरीबी दूर नहीं की जा सकती, उसका समाधान एक निरंतर आय है जो स्वरोजगार से ही उपलब्ध हो सकती है। राज्य सरकार ने 'परिवार पहचान पत्र' योजना के जरिए पता लगाया कि प्रदेश में असल गरीब परिवार कितने हैं और कौन-कौन हैं। उच्चाधिकारियों व एक्सपर्ट के साथ बैठकें कर चर्चा की गई कि इन परिवारों को स्थाई रूप से कैसे उबारा जा सकता है।

पहले सर्वे में ज्ञात हुआ कि राज्य में करीब तीन लाख परिवार ऐसे हैं जिनकी आय जीविका-उपार्जन के बनिस्बत कम है। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने इस दिशा में आगे बढ़ते हुए निर्णय लिया कि ऐसे सभी गरीब परिवारों को अंत्योदय मेलों के जरिए आमंत्रित कर उन्हें सरकार व बैंकों की ओर से हर संभव मदद उपलब्ध कराई जाए ताकि वे किसी के भरोसे न रहें। गरीबी उन्मूलन की दिशा में ठोस पहल करते हुए लगता है मुख्यमंत्री ने सही मायने में 'आजादी का अमृत महोत्सव' सार्थक कर दिया है।

ताकि गरीब परिवार आत्मनिर्भर बनें: आशीष

गोहाना के एसडीएम आशीष कुमार ने कहा कि आयोजित किए जाने वाले मेलों के जरिए उनके क्षेत्र से 1281 परिवारों को इन मेलों के माध्यम से स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जाएगा तथा उनको आर्थिक सहायता के लिए बैंकों द्वारा ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा।

इस योजना का उद्देश्य गरीब परिवारों को रोजगार देना, स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना, कौशल विकास को बढ़ावा देना तथा बैंकों से ऋण मुहैया करवाना मुख्यत शामिल है ताकि गरीब व्यक्ति आत्मनिर्भर हो सकें। उन्होंने बताया कि मेलों के पहले चरण में लाभार्थियों से आवेदन प्राप्त कर उन्हें बैंक द्वारा अुनमति की कार्यवाही की जाएगी तथा दूसरे चरण में यह अनुमति पत्र लाभार्थी को प्रदान कर स्कीम का लाभ दिया जाएगा।

मसावी व शजरा के रिकॉर्ड को डिजिटलाइज किया जाएगा। इससे जमीनों के नक्शे तैयार करने में आसानी आएगी। कपड़े पर अंकित शजरा के रिकॉर्ड को स्कैन करने का काम कुछ जिलों में पूरा, बाकी जिलों में जल्द पूरा किया जाएगा।

किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त और सुदृढ़ बनने के लिए दुग्ध उत्पादन और दुध से जुड़े उत्पादों को बढ़ावा देना चाहिए। फसल विविधिकरण के तहत नए कृषि प्रोजेक्ट और बागवानी को भी व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहिए।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
सत्यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

भावार्थ : श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण यानी जो-जो काम करते हैं, दूसरे मनुष्य (आम इंसान) भी वैसा ही आचरण, वैसा ही काम करते हैं। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण या उदाहरण प्रस्तुत करता है, समस्त मानव-समुदाय उसी का अनुसरण करने लग जाते हैं।

श्रम विभाग, हरियाणा द्वारा पंजीकृत असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने वाले कामगारों का 'ई-श्रम योजना' के तहत दो लाख रुपए तक का दुर्घटना बीमा निःशुल्क होगा। स्थाई अंग भंग होने पर उसे एक लाख रुपए तक की सहायता दी जाएगी।

हरियाणा के पशु अस्पतालों में किसान क्रेडिट कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। किसान नज़दीकी पशु चिकित्सा केंद्र पर जाकर 'पशु किसान क्रेडिट योजना' का लाभ उठा सकते हैं।

जीवन का सार है गीता

कुरुक्षेत्र स्थित ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव-2021 में 2 दिसंबर से शुरू हुए सरस और क्राफ्ट मेले में जहां एक ओर शिल्पकार अपनी अद्भुत शिल्पकला को दिखाकर पर्यटकों के मन को मोहा, वहीं दूसरी ओर दूसरे राज्यों से आए लोक कलाकारों ने अपने-अपने राज्यों की लोक संस्कृति को दिखाकर महोत्सव में रंग भरने का काम किया। इस अद्भुत लोक संस्कृति के दृश्य को ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर अपने वाले सभी पर्यटक अपने कैमरों में कैद किया। इस महोत्सव की गूंज यहीं नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों में भी सुनाई देने लगी। महोत्सव ने विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान बनाने का काम किया है।

शिल्पकारों की हाथों की हाथों की जादुई कलाकारी के साथ-साथ दूसरे राज्यों से आए लोक कलाकारों की अद्भुत लोक संस्कृति को देखकर इस धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर आने वाला प्रत्येक पर्यटक अपने साथ-साथ दूसरे राज यों के लोगों के साथ भी इन पलों को सांझा करते हुए नजर आए। महोत्सव में कई राज्यों के लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति देकर सैलानियों का मनोरंजन किया। हरियाणा, पंजाब, गुजरात, उत्तराखंड, राजस्थान, हिमाचल के साथ-साथ कई अन्य राज्यों की लोक संस्कृति इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में देखने को मिली। लोक कलाकारों की प्रस्तुति को देखकर पर्यटक थिरकने को मजबूर हो गए। संगीतमय लोक संस्कृति ने वहां पर आने वाले सभी पर्यटकों के मन को झंझोर के रख दिया है। हरियाणा के इतिहास में 48 कोस के 75 तीर्थ स्थलों पर पहली बार गीता जयंती के दिन लाखों दीपक एक साथ जगमगाएं। महोत्सव में दूसरी बार ब्रह्मसरोवर के पावन तट पर अयोध्या की तर्ज पर लाखों दीप रोशन किए गए।

महोत्सव 2021 में पुरूषोतमपुरा बाग के पास सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग की तरफ से आजादी के अमृत महोत्सव और राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राज्यपाल बंडारु दत्तात्रेय द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में हरियाणा का आजादी में क्या योगदान रहा, पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है ताकि युवा पीढ़ी को प्रदेश के इतिहास के बारे में एक मंच पर जानकारी मिल सके। इसके साथ ही 30 से ज्यादा विभागों ने अपने-अपने विभाग से संबंधित योजनाओं को स्टाल पर रखा है। इन सभी स्टालों पर लोगों को जागरूक किया जा रहा है कि सरकार की योजनाओं का किस प्रकार फायदा उठाया जा सकता है और कौन-सी योजना किस व्यक्ति के लिये है।

-संवाद ब्यूरो

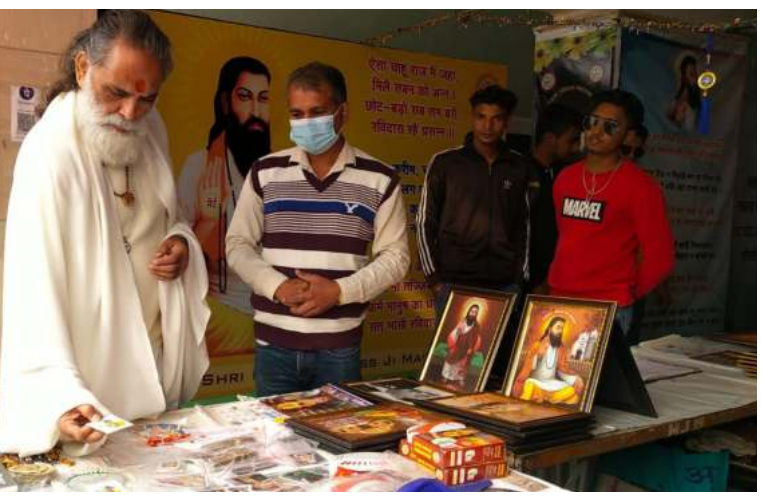

श्रीमद्भगवद्गीता जीवन का सार है। यह देश और प्रदेशवासियों के लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि इस बार गीता जयंती के दिन इस उपदेश को 5 हजार 158 वर्ष हो जाएंगे। गीता हर व्यक्ति के जीवन के लिए कुछ न कुछ सिखाती है, चाहे वह विद्यार्थी हो, सैनिक हो, अध्यापक हो या फिर राजनीतिज्ञ हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन के बाद हरियाणा सरकार गीता जयंती महोत्सव को वर्ष 2016 से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मना रही है। इसी कड़ी में इस बार अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव 2 दिसंबर से शुरू होकर 19 दिसंबर तक धूमधाम से मनाया गया।

मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने उपमंडल पुस्तकालय चरखी दादरी को जिला पुस्तकालय के रूप में अपग्रेड करने और पलवल में नया जिला पुस्तकालय खोलने की स्वीकृति प्रदान की है।

हरियाणा राज्य हज कमेटी ने 'हज-2022' के लिए 31 जनवरी 2022 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए हैं। जो व्यक्ति प्रशिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहते हैं वे वेबसाइट पर आवेदन कर सकते हैं।

कृषि उत्पाद खरीदने खेत में पहुंच रही कंपनियां

किसान उत्पादक संगठनों को अब अपने उत्पाद मंडी व अन्य स्थानों पर बेचने की आवश्यकता नहीं होगी। नामी कंपनियां सीधे खेत से फल, सब्ज़ियां व शहद की खरीद करेंगी और उन्हें उचित दाम भी देंगी यह कंपनियां प्रदेश के एफ.पी.ओ. को सीधे तौर पर बाज़ार से जोड़ेंगी। इस उद्देश्य को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री आवास पर सीएम की मौजदूगी में हरियाणा सरकार के सहयोग से लघु किसान कृषि व्यापार संघ, हरियाणा (स्फैक) ने भारत की 29 कंपनियों का एफ.पी.ओ. से एक वर्ष के लिए अनुबंध कराया है।

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने कहा कि किसान की आर्थिक स्थिति मज़बूत करने और उन्हें व्यापार एवं बाज़ार के प्रति आकर्षित करने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं ताकि प्रदेश में हर हाथ को काम मिल सके और उनकी आमदनी दोगुनी हो सके। फूड प्रोसेसिंग में आगे आने वाली कंपनियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अब खरीददारों को भी लाभ मिलेगा और बाज़ार में कीमतें भी कम होगी। उन्होंने कृषि क्षेत्र के निवेशकों एवं एफपीओ से आग्रह किया कि वे मुख्यमंत्री अंत्योदय उत्थान योजना के तहत रोज़गार देने में प्रदेश में एक लाख से कम आय वाले परिवारों को प्राथमिकता दें। उन्होंने प्रदेश के 500 प्रगतिशील किसानों से छोटे किसानों को फसल विविधिकरण का प्रशिक्षण देने को कहा।

बागवानी विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. अर्जुन सिंह सैनी ने बताया कि जहां किसान उत्पादक संगठन बनाकर किसानों को

एक साथ खेती करने के लिए तैयार किया जाता है। वहीं, लघु किसान कृषि व्यापार संघ, हरियाणा का उद्देश्य उनकी फसल का उचित भाव किसान उत्पादक संगठनों को दिलाना है। इसके लिए स्फैक किसानों को हर एक मदद मुहैया करा रही है।

क्या है एफपीओ

हरियाणा प्रदेश बागवानी विकास के साथ-साथ किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) के गठन में अग्रणी राज्य के रूप में उभर रहा है। एफ.पी.ओ. का उद्देश्य किसानों को एकत्रित करके, उनके उत्पादन का उनको अधिक से अधिक मूल्य प्रदान कराना है। इस कड़ी में लघु किसान कृषि व्यापार संघ, हरियाणा (स्फैक) लगातार अहम भूमिका अदा करा रहा है। ये कृषि को उपयोगी बनाने के लिए भी कार्य कर रहे हैं। इससे आर्थिक तौर पर मूल्यांकन हो रहा है और छोटे किसानों को भरपूर लाभ मिलता है। एफपीओ किसानों के उत्पादन, बिक्री, गुणवत्ता, पैकिंग, प्रोसेसिंग आदि में सुधार कर रहे हैं।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव सुमिता मिश्रा ने कहा कि राज्य में कुल 599 एफ.पी.ओ का गठन हो चुका है, इन्हें कंपनी अधिनियम 2013 के अतर्गत पंजीकृत करवाया जा चुका है और इन किसान उत्पादक कंपनियों के साथ 77,985 से भी अधिक किसानों को जोड़ा जा चुका है। भारत सरकार द्वारा हाल ही में घोषित नई एफ.पी.ओ. नीति के अंतर्गत वर्ष 2023-24 तक एफ.पी.ओ गठन के लक्ष्य को 1,000 तक पहुंचाने के प्रयास किये जायेगें। नए एफ.पी.ओ. का गठन राज्य में कलस्टर निर्माण के अधार पर किया जायेगा।

कंपनियों का इनसे हुआ अनुबंध

अनुबंधित कंपनियां एफ.पी.ओ. से जहां सीधे तौर पर फसल खरीदेगी। इन फसलों को वो कंपनियां देश-विदेश में बेचने के लिए भेजेगी। इसके अलावा कुछ कंपनियां इन फसलों को खरीदकर इन्हें रिटेल में ऑनलाइन सेल करेगी।

इंडोकेन हनी प्राइवेट लिमिटेड का अनुबंध अंबाला बी-हनी एफ.पी.सी.एल. के साथ हुआ है। क्रोफार्म एग्री प्रोडेक्ट प्राइवेट लिमिटेड का सोनीपत की खेवड़ा एफ.पी.सी.एल. के साथ अनुबंध सभी प्रकार की सब्ज़ियां एवं फलों को खरीदने के उद्देश्य से हुआ है। सिद्धि विनायक, एग्री प्रोसेसिंग प्राइवेट लिमिटेड पूना का अनुबंध जमालपुर यमुनानगर, एग्रो सर्व, पंचकूला, अर्शल एग्रो फतेहबाद, सब्जी उत्पादक व प्योर एग्रो यमुनानगर, सोढी - बोढी, कुरुक्षेत्र, एग्रोटेक पंचकूला, फर्मग्रेनिक एग्रो टेक, करनाल एफ.पी.सी.एल. का आलू के बीज (बाय बैक खरीदने की व्यवस्था) के साथ को लेकर अनुबंध हुआ है। इसके अलावा बी.डी. एग्रो फूड्स, कपूरथला, पंजाब का अर्शल एग्रो फतेहबाद का आलू सीड्स को लेकर अनुबंध हुआ हैं। कूल टेक, जालंधर, पंजाब का एग्रोसर्व एफ.पी.सी.एल., पंचकूला के साथ आलू सीड्स को लेकर समझौता हुआ है।

इसी तरह बी.एन. इंटरनेशनल, आजादपुर न्यू दिल्ली का सिरसा एफ.पी.सी.एल. सिरसा के साथ, यूनिक लीफ एग्री बिजनेस, प्राइवेट लिमिटेड होशागबाद, मध्य प्रदेश का सिरसा एफ.पी.सी.एल. सिरसा के साथ, आईकोगनेटिक ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड, पूना का सिरसा एफ.पी.सी.एल. सिरसा, रोशन लाल एंड कंपनी राजपुरा पंजाब का सिरसा एफ.पी.सी.एल. सिरसा, ऑल फ्रैश मैनजमेंट, प्राइवेट लिमिटेड, न्यू दिल्ली का सिरसा एफ.पी.सी.एल. सिरसा व चीफू एग्रोटेक, प्राइवेट लिमिटेड का खारी सुरेरा एफ.पी.सी.एल. सिरसा के साथ किन्नू को लेकर अनुबंध हुआ है। इसके अलावा मंडी गेट प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली का सोनीपत की खेवड़ा एफ.पी.सी.एल. के साथ सभी प्रकार की सब्ज़ियां व फलों का समझौता हुआ है।

सब्ज़ियों व मसालों के लिए अनुबंध

फ्रैश प्रोड्यूस का मेवात वेजिटेबल एफ.पी.सी.एल. मेवात, हैंडस ऑन टेड प्राइवेट लिमिटेड का एफ.पी.सी.एल. पलवल, बीजापुरी डेयरी का सोनीपत की खेवड़ा एफ.पी.सी.एल., फार्मब्रिज एग्री एंड फूड प्रोससिंग कंपनी का मनौली गांव सम्पदा एफ.पी.सी.एल. सोनीपत का सभी प्रकार की सब्ज़ियों के साथ अनुबंध हुआ है। मैसर्ज माधव फूड्स एंड एग्रो अमृतसर पंजाब का गिगराज एफ.पी.सी.एल., पंचकूला का हल्दी ओर अदरक का अनुबंध हुआ है। मैसर्ज मैहता बिशनदास, एंड एसोसिएट का गिजराज एफ.पी.सी.एल, पंचकूला के साथ लाल मिर्च, हल्दी ओर अदरक का समझौता हुआ है। प्रकाश गोल्ड मसाले का छपरा एफ.पी.सी.एल., पंचकूला के साथ लाल मिर्च को लेकर समझौता हुआ है।

-संवाद ब्यूरो

रोज़गार

कुछ नया करना चाहते हैं तो आइये कृषि विश्वविद्यालय

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के गांधी भवन में नाबार्ड एवं कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत संचालित एबिक पिछले दो वर्षों से बेरोजगारों के लिए रोजगार सृजन करने का कार्य कर रहा है। इस केंद्र से प्रशिक्षण पाकर विभिन्न क्षेत्रों में युवा रोल मॉडल के रूप में स्वयं को स्थापित कर रहे हैं।

केंद्र में पिछले दो वर्ष में 100 के करीब किसान व उद्यमी प्रशिक्षण प्राप्त करके इसका लाभ ले चुके हैं। यह केंद्र कृषि व उससे जुड़े सहयोगी व्यवसाय की समस्याओं के समाधान में भूमिका भी निभा रहा है। यहां से प्रशिक्षण पाकर अपने व्यवसाय को ज्यादा बेहतर तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। यह केंद्र औद्योगिक स्टार्टअप को आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वर्ष 2019 से संचालित में इस केंद्र में पिछले वर्ष 17 लोगों ने आवेदन किया था जिसमें 8 महिलाएं चयनित हुई थी। अब तक इस केंद्र से 27 आवेदकों की अनुदान राशि स्वीकृत हुई थी। केंद्र में 10 लोगों की टीम सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। प्रशिक्षण के लिए चयनित होने के बाद उन्हें केंद्र 2 महीने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

केंद्र ने इसकी शुरुआत युवाओं ,किसानों एवं उन उद्यमियों के लिए विशेष तौर पर की हुई हैं। जो नया करना चाहते हैं व अपने क्षेत्र में पहले से स्थापित है। केंद्र इस दिशा में मार्केटिंग, नेटवर्किंग,लाइसेंसिंग ट्रेडमार्क व पेटेंट तकनीक व फंडिंग संबंधित प्रशिक्षण लेकर कृषि क्षेत्र में आवेदन करने वालों का मार्ग दर्शन करके उन्हें से यहां संचालित दो कार्यक्रमों पहल व सफल का मार्ग दर्शन करता है। केंद्र से संचालित 'पहल' कार्यक्रम के लिए 5 लाख की राशि व 'सफल' कार्यक्रम के लिए 25 लाख की राशि निर्धारित की गई है।

केंद्र द्वारा आवेदन की प्रक्रिया निःशुल्क की हुई है। आवेदन करने वाला प्रदेश या फिर निकटवर्ती राज्य का होना चाहिए। अगर वह बाहर का है तो उसे हरियाणा में आकर अपना व्यवसाय स्थापित करना होगा। आवेदन करने वाले का मुख्य आइडिया एग्री बॉयोटेक, बागवानी, जैविक खेती, पशुपालन मत्स्य पालन, सूक्ष्म सिंचाई, कृषि अभियांत्रिकी, खेती मशीनीकरण के अलावा कटाई व कटाई के बाद की प्रक्रिया खाद्य प्रक्रिया एवं मूल्य संवर्धन कृषि में कृत्रिम बुद्धिमता इत्यादि पर अनवेषण किया हो व अपने व्यवसाय को स्थापित कर चुका हो का विशेष ध्यान रखना होगा।

-संवाद ब्यूरो

खेती ने बदली तकदीर

'कैथल वैजिटेबल फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' के निदेशक व प्रगतिशील युवा किसान गुरदयाल सिंह ने तरबूज़ व खीरा की अच्छी पैदावार लेकर ख़ासा लाभ कमाया है। उनका मानना है कि बागवानी विभाग, हरियाणा द्वारा निजी कंपनियों के साथ एफपीओ के एमओयू साइन करने से उनके सब्ज़ियों व फलों के बिकने में आसानी होगी और साथ ही आमदनी बढ़ेगी।

गुरदयाल ने इस वर्ष अगस्त के माह में आठ एकड़ ज़मीन पर तरबूज़ व खीरा की खेती की और इंटर क्रॉप के माध्यम से स्वीट कॉर्न की खेती की। बेमौसमी खेती में फसल की पैदावार बहुत अधिक हुई। उन्होंने बताया कि यह खेती उन्होंने धान की खेती के बदले 'मेरा पानी-मेरी विरासत' के अंतर्गत की और इससे पानी की बचत हुई। जबकि गत वर्ष पांच एकड़ ज़मीन पर धान की खेती के बदले सब्ज़ियों व फलों की खेती की थी। इस खेती के लिए हरियाणा सरकार की ओर से मिलने वाले वित्तीय सहायता का लाभ भी उठाया।

वे बताते हैं कि सब्ज़ियों व फलों की खेती से बढ़ते मुनाफ़ा को देखते हुए घीया, लौकी, करेला व तरबूज़, खरबूज़ की खेती में इज़ाफा किया। वह टनल, मल्चिंग, ड्रिप एरिगेशन, नेट हाउस व अन्य खेती में नवीन तकनीकों का प्रयोग करते रहते हैं। इससे फसल की उच्चतम दर्जे की पैदावार होती है और कीमत अधिक मिलती है।

उन्होंने बताया कि उनके संगठन की ओर से बीज, खाद व बायो पेस्टीसाइड दवाई की बिक्री की जाती है। इसके अतिरिक्त साउथ कोरिया की कंपनी का कैटल फीड दुकान में बेचा जाता है। इस कैडल फीड की बाज़ार में अधिक मांग है। उन्होंने बताया कि जैविक खेती कम करते हैं और उनकी खेती में कम रसायनों का प्रयोग किया जाता है, जिससे स्वास्थ्य को अधिक नुकसान नहीं पहुंचता।

वह किसानों के पेप्सीको, हल्दीराम, मैकेन, इंडिया फूड लिमिटेड से एग्रीमेंट करवाते हैं और उनको आलू सप्लाई करते हैं। उनके एफपीओ का सीवन के मलिकपुर गांव में इंटीग्रेटिड पैक हाउस भी तैयार हो रहा है। एक एकड़ ज़मीन पर लगभग तीन करोड़ की लागत से यह कोल्ड स्टोर तैयार हो रहा है। इसमें बागवानी विभाग हरियाणा की ओर से 70 से 90 प्रतिशत रियायतें दी गई है। उनका कहना है कि इस स्टोर में सब्ज़ियों व फलों की ग्रेडिंग, वॉशिंग, पैकिंग व स्टोरेज की सुविधा होगी, इससे किसानों की सहूलियतें बढ़ जाएगी। वह खेती के साथ-साथ पशुपालन भी करते हैं और 25 के करीब पशु है। इनका दूध, पनीर व घी बनाकर डेयर फार्मिंग से दोगुणा लाभ कमा रहे हैं।

-संगीता शर्मा

HSVP

सरकारी विभागों में जनता के काम समयबद्धे हों, इसके लिए राइट टू सर्विस कमीशन ने हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण की 43 सेवाओं को अधिसूचित किया है। एचएसवीपी की अधिसूचित सेवाओं की सूची 16 से बढ़कर 43 हो गई है।

राष्ट्रीय मार्गों व राज्य के राजमार्गों पर भारी वाहनों के लिए एक लेन ड्राइविंग को दुरूस्त किया जाएगा ताकि छोटे व मध्यम वाहनों को किसी भी प्रकार की दिक्कत न हो और दुर्घटनाओं को टाला जा सके।

नकारात्मक पत्रकारिता और समाज

पत्रकारिता सिर्फ़ मुनाफ़े के लिए नहीं है। मुनाफे के लिए बहुत-से व्यवसाय पड़े हैं, कम-से-कम पत्रकारिता को अपने मुनाफ़े के लिए भ्रष्ट मत करो। पत्रकारिता को अपने मुनाफ़े का बलिदान देने के लिए तैयार होना पड़ेगा, तभी वह लोगों की रूग्ण ज़रूरतों को ही पूरा नहीं करेगी, बल्कि उनके मौलिक और बुनियादी कारणों को प्रकट कर सकेगी, जो दूर किए जा सकते हैं। पत्रकारिता व्यवसाय नहीं, एक क्रांति होनी चाहिए। बुनियादी रूप से पत्रकार एक क्रांतिकारी व्यक्ति होता है, जो चाहता है कि यह दुनिया बेहतर हो। वह एक युयुत्स है और उसे सम्यक कारणों के लिए लड़ना है। मैं पत्रकारिता को अन्य व्यवसायों में से एक नहीं मानता।

पत्रकारिता और अन्य समाचार माध्यम इस संसार में एक नई घटना है। इस तरह की कोई प्रणाली गौतम बुद्ध और जीसस के समय नहीं थी। उस वक्त जो दुर्घटनाएं होती थीं, उनका हमें कुछ पता नहीं है, क्योंकि उस समय कोई समाचार माध्यम नहीं था। समाचार माध्यमों के आगमन से बिल्कुल ही नई बात पैदा हुई है। जो भी अशुभ है, जो भी बुरा है, जो भी नकारात्मक है- फ़िर वह सच हो अथवा झूठ, वह सनसनीखेज बन जाता है, वह बिकता है। लोगों की उत्सुकता होती है बलात्कार में, हत्या में, रिश्वत में, सब तरह के अपराधी कृत्यों में, दंगे-फसादों में। चूंकि लोग इस तरह के समाचारों की मांग करते हैं इसलिए तुम संसार में जो भी अशुभ घटा है उसे इकट्ठा करते हो। फूलों का विस्मरण हो जाता है, केवल कांटे ही कांटे याद रह जाते हैं-और उनको बड़ा करके दिखाया जाता है। अगर तुम उन्हें खोज नहीं पाते हो तो तुम उन्हें पैदा करते हो क्योंकि अब तुम्हारी एक मात्र समस्या है-बिक्री कैसे हो?

पत्रकारिता ने अपराधियों के महान बनने की संभावना का द्वार खोल दिया। स्वीडन में पिछले दिनों एक घटना घटी। एक आदमी ने एक अजनबी की हत्या कर दी और अदालत में उस हत्यारे ने कहा कि मैं अपना नाम समाचार पत्रों में प्रथम पृष्ठ पर देखना चाहता था। मेरी एकमात्र इच्छा यह थी कि अख़बारों में मैं अपना नाम छपा हुआ देख लूं। मेरी इच्छा पूरी हुई। यह सब गलत बातों पर ध्यान देने के कारण हैं। इसी वजह से एक बड़ा ही विचित्र व्यक्तित्व पैदा हो रहा है।

समाचार माध्यमों को कुछ चीजों का बहिष्कार करना चाहिए। लोगों के प्रति अमानवीयता पैदा होती है। लेकिन उनका निषेध करने की बजाय तुम उनसे मुनाफा कमाते तो, उनके बल पर समृद्ध होते हो, बिक्री बढ़ाते हो

परन्तु इस बात की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देते कि इसके अंतिम परिणाम क्या होंगे? पुराने अर्थशास्त्र की धारणा थी कि मांग होने पर पूर्ति होती है। लेकिन नवीन अन्वेषण बताते हैं कि जहाँ पूर्ति होती है वहां धीरे-धीरे मांग पैदा हो जाती है। पत्रकारिता को न मात्र लोगों की जरूरतों को पूरा करने की ओर ध्यान देना चाहिए बल्कि उसे स्वस्थ पूर्ति भी पैदा करनी चाहिए, जो लोगों में स्वस्थ मांग पैदा करे।

लोग विज्ञापन क्यों देते हैं? ख़ासकर अमेरिका में, वह उत्पादन तो दो साल बाद बाज़ार में आता है और उसका विज्ञापन दो साल पहले शुरू हो जाता है। इस प्रकार पहले पूर्ति होती है, वह पूर्ति मांग पैदा करती है। इसलिए बड़े-बड़े विज्ञापनों की ज़रूरत होती है। मैंने पूरे विश्व की यात्रा की है और मैं हैरान हुआ हूँ कि यह तथाकथित समाचार माध्यम, अगर उसे कुछ नकारात्मक नहीं मिलता तो वह उसे पैदा करता है। हर प्रकार के झूठ निर्मित किये जाते हैं। वह लोगों के दिमाग में यह ख़्याल पैदा नहीं करता कि हमारी प्रगति हो रही है। हम विकसित हो रहे हैं। हमारे भविष्य में इससे बेहतर मनुष्यता होगी। वह सिर्फ़ यही ख्याल पैदा करती है कि रात घनी से घनी होती चली जाएगी। समाचार पत्र, आकाशवाणी के प्रसारणों, दूरदर्शन, फिल्मों पर एक नजर डालें तो ऐसा लगता है कि अब नरक की ओर जाने के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचा है। हमारे पाठक भी कुछ कम नहीं हैं।

-ओशो

'बिन मांगे मोती मिले..' की सोच के साधक अनुपम

कम लोग अपने नाम को अर्थवान कर पाते हैं। जब नाम अनुपम हो तो यह काम और कठिन हो जाता है। अनुपम नाम होना और अनुपम होना, ज़मीन और आसमान की ऊंचाई-निचाई की बात हो जाती है। लेकिन जिस व्यक्ति का यहां जिक्र किया जा रहा है, वह नाम के साथ अनुपम अर्थ वाले भी थे। अनुपम होने के पीछे क्या होना होता है, क्या नहीं होना होता है और कैसे होना होता है, यह जानना-समझना हमारे जीवन की आपाधापी में काफी पीछे छूट चुका है. लेकिन जिसने इसे जान-समझ लिया, वह वाकई अनुपम हो जाता है।

अनुपम मिश्र को शरीर छोड़े पांच साल हो चुके हैं, लेकिन लगता है वह अशरीरी होकर अपने को अधिक व्यापक रूप में अर्थवान कर रहे हैं। बाढ़-सुखाड़, पानी और पर्यावरण जब जीवन का संकट बनते जा रहे हैं तो समझिए अनुपम मिश्र इस संकट में हर क्षण समाधान बनकर सामने खड़े हैं। याद उसे करते हैं, जो अप्रासंगिक होकर भुलाया जा चुका हो। जो हर क्षण सामने खड़ा है, उसे तो बरतने की ज़रूरत है। अनुपम मिश्र को बरतना आसान भी नहीं है, लेकिन न बरतना कहीं अधिक कठिनाई पैदा करने वाला है।

अनुपम जी व्यक्ति प्रचार को पसंद नहीं करते थे। स्वयं किसी के बारे में न लिखते थे, न खुद के बारे में लिखवाना चाहते थे। उन्होंने अपने पिता प्रख्यात कवि पंडित भवानी प्रसाद मिश्र के बारे में भी अपने पूरे जीवनकाल में सिर्फ़ एक आलेख को छोड़कर कभी कुछ नहीं लिखा। अनुपम मिश्र अपने समय के शीर्ष गद्य लेखक थे। उनकी जगह कोई दूसरा होता तो इतने प्रतिष्ठित पिता पर एक क्या कई पुस्तकें लिख चुका होता। हर साल जयंती और पुण्यतिथि मनाने के लिए कोई एक संस्था बना लिया होता। अनुपम जी ने ऐसा नहीं किया. अनेक पत्रकार अक्सर उनसे पानी और अन्य मुद्दों पर बात करने पहुंच जाते। विनम्रता के साथ वह उन्हें किसी दूसरे विशेषज्ञ के पास भेज देते थे, विशेषज्ञ का पता और फोन नंबर तक उपलब्ध करा देते थे। फोन करके उसे बोल भी देते थे। लेकिन जब कोई विनती करता कि नहीं आपके बग़ैर दिक्कत हो जाएगी तो ऐसी स्थिति में वह सारा काम छोड़कर उसकी मदद भी कर देते थे। अनुपम जी ने जो कुछ लिखा, जो कुछ बोला समाज के लिए। स्वयं को आगे बढ़ाने या लेखक, वक्ता, विशेषज्ञ के रूप में स्थापित होने के लिए उन्होंने एक शब्द न लिखा, न बोला। वह जर्मन चिंतक राइनर मारिया रिल्के के उस कथ्य से शायद प्रभावित थे, जिसे उसने एक युवा कवि को लिखे अपने पत्र में कहा था- लिखे बगैर रह सको तो मत लिखो।

अनुपम जी ने जो भी किताबें लिखीं, चाहे वह 'आज भी खरे हैं तालाब' हो, 'राजस्थान की रजत बूंदें' हो या फिर 'हमारा पर्यावरण' , किसी में भी खुद को लेखक घोषित नहीं किया। उनकी किताबों में उनका नाम ढूढ़ने के लिए मैग्नीफाइंग लेंस की जरूरत होती है। गांधी मार्ग का पुनः प्रकाशन शुरू हुआ तो उसमें भी उन्होंने अपना नाम नाममात्र का ही दिया। स्वयं को संपादक घोषित नहीं किया। कई लोगों ने इसके लिए उन्हें फोन किया कि पत्रिका में एक ग़लती जा रही है। संपादक की जगह संपादन लिखा हुआ है। अनुपम जी ने विनम्रता के साथ कहा कि 'यह ग़लती नहीं है, मैं तो संपादन ही करता हूं' अनुपम जी संज्ञा के बदले क्रिया रह कर जीना चाहते थे और उन्होंने इसे अंतिम क्षण तक जीया। लोग जिन चीज़ों के लिए जीते-मरते हैं, अनुपम जी उन सभी चीज़ों से आजीवन मुक्त रहे।

अनुपम जी किसी चीज़ के प्रति आग्रही नहीं होते थे, निराग्रही भी नहीं, दुराग्रह तो कोसों दूर की बात थी उनके लिए। अधिकार शब्द से उन्हें बहुत चिढ़ थी, वह अधिकार पाने के लिए की जाने वाली किसी कोशिश, आंदोलन से अलग रहते थे। वह सिर्फ़ काम करने का अधिकार जानते थे, जिसे ईश्वर ने सभी को देकर धरती पर भेजा है। इसमें न तो किसी को देना है और न किसी से कुछ लेना है। न जीतना है, न हारना है। बस काम करते जाना है। अनुपम जी के जीवन का मार्ग यही था। अपनी पुस्तक 'आज भी खरे हैं तालाब' में उन्होंने लिखा भी है -'बस अच्छे-अच्छे काम करते जाओ' वह अक्सर यह भी कहते थे -'देखो, काम तो करने से ही होगा, अधिकार मांगने से कुछ नहीं मिलने वाला है' वे कबीर के 'बिन मांगे मोती मिले...' की सोच के साधक थे। जीवन के अंतिम क्षण तक उन्होंने इस साधना को जारी रखा.

उनका प्रिय विषय पानी था, लेकिन उस पानी में जीवन के तमाम विषय घुले हुए थे, जो समय-समय पर उतराते रहते थे। कोई चाहे तो गोता लगाकर अपनी पसंद का मोती निकाल सकता था। उन्होंने अपने एक लेख में 'भाषा और पर्यावरण' की अनुपम जुगलबंदी पेश की है। एक आग्रही मित्र के आग्रह पर उन्होंने 'पुरखों से संवाद' का अद्भुत दर्शन पेश किया है। इसी तरह एक अन्य मित्र के आग्रह पर मृत्यु से साल भर पहले उन्होंने 'जीवन का अर्थ और अर्थमय जीवन' विषय पर अद्भुत व्याख्यान दे डाला था।

-सुरेंद्र बांसल

एक गुमनाम लोककवि
पं हरिकेश पटवारी

आशु कवि पंडित हरिकेश पटवारी का जन्म 7 अगस्त 1898 को गांव धनौरी, तहसील नरवाना, जिला जींद में हुआ। धनौरी गांव नरवाना-पतरन राजमार्ग पर दाता सिंह वाला से 5 किलोमीटर की दूरी पर है। उस समय धनौरी पटियाला रियासत में पड़ता था। पिता उमाशंकर व माता का नाम बसन्ती देवी के सानिध्य संग पं हरिकेश ने प्राथमिक शिक्षा गांव धनौरी में ही ग्रहण की। आगे की पढ़ाई के लिए आस-पास में साधन न होने के कारण उन्हें माध्यमिक शिक्षा के खन्ना (पंजाब) जाना पड़ा। युवा होने पर उन्होंने आसपास के गावों से सवारियां ढोने के लिए एक लॉरी बस खरीदी। लेकिन कुछ समय बाद ही बस बेच कर उन्होंने राजस्व विभाग में पटवारी के पद पर कार्य शुरू किया। इसी कारण उनके नाम के साथ 'पटवारी' शब्द जुड़ गया। पंडित जी अपनी हाज़िर -जवाबी के लिए भी प्रसिद्ध थे। उन्होंने कई भाषाओ में लेखन कार्य भी किया। आज़ादी के बाद हरियाणा के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश को बहुत विश्वसनीय ढंग से अपनी रचनाएं प्रस्तुत की।

1947 मं बंटवारे का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया-

सन् 47 मं हिन्द देश का बच्चा-बच्चा तंग होग्या
राज्यों का जंग बन्द होग्या तो परजा का जंग होग्या
जिस दिन मिल्या स्वराज उसी दिन पड़गी फूट हिन्द मं
जितने थे बदमास पड़े बिजळी ज्यों टूटी हिन्द मं
छुरे बम्ब पिस्तौल चले कई होगे शूट हिन्द मं
पिटे कुटे और लुटे बड़ी माची लूट हिन्द मं
एक एक नंग साहूकार हुआ एक एक सेठ नंग होग्या।
कलकत्ता बम्बई कराची पूना सूरत सितारा
गढ़ गुड़गामां रोहतक दिल्ली बब्बू टांक हजारा
हांसी जीन्द हिसार आगरा कोटा बलख बुखारा
लुधियाणा मुलतान सिन्ध बंगाल गया सारा
भारत भूमि तेरा रक्त में गूढ़ सुरख रंग होग्या।
कुछ जबर जुल्म नै सहगे कुछ कमजोर थे डरगे
कुछ भय में पागल होगे कुछ खुदकशी करगे
कुछ भागे कुछ मजहब पलटगे कुछ कटगे कुछ मरगे
खाली पड़े देखल्यो जाकै लाहौर अमृतसर बरगे
जणों दान्यां नै शहर तोड़ दिए साफ इसा ढंग होग्या।

रचनाओं में व्यक्त सच्चाई और सहज कला के कारण उनकी रागनियां बेहद लोकप्रिय हुईं। पं हरिकेश पटवारी रेडियो सिंगर थे। सन् 1952 में भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं जवाहरलाल नेहरू के नरवाना आगमन के समय भी पं हरिकेश पटवारी ने अपनी रचनाये प्रस्तुत की थी। 18 फरवरी 1954 को पं हरिकेश पटवारी इस संसार से चल बसे।

- संवाद ब्यूरो

गृहमंत्री अनिल विज ने कहा है कि सुरक्षा एवं पारदर्शिता के मद्देनजर राज्य के सभी पुलिस थानों व पुलिस चौकियों में आगामी एक अप्रैल, 2022 तक सीसीटीवी कैमरे लगा दिए जाएंगें।

शिक्षा बोर्ड, भिवानी द्वारा प्रवेश वर्ष-2019 व 2020 के डी.एल.एड प्रथम वर्ष एवं प्रवेश वर्ष- 2019 के द्वितीय वर्ष (रि-अपीयर) की परीक्षाओं का संचालन 5 जनवरी, 2022 से करवाया जा रहा है।

जागरुक नारी, शक्ति हमारी

महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए 16 महिला पुलिस कर्मियों ने निकाली साइकिल यात्रा

महिला सशक्तिकरण को मजबूत करने तथा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से हरियाणा पुलिस की 16 महिला कर्मियों ने साइकिल यात्रा निकाली।

यात्रा के दौरान महिलाओं को उनके अधिकारों, अपराध निवारण युक्तियों तथा विभिन्न एजेंसियों की भूमिका के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया गया। इस दौरान उन्होंने 23 पुलिस जिलों में आयोजित सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें 7,000 से अधिक महिलाओं और बेटियों ने भागीदारी की। हरियाणा के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को 'जागृति यात्रा' अभियान के सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल किया गया।

महिला पुलिस कर्मियों ने 'जागरूक नारी, शक्ति हमारी' नारे के साथ प्रदेश भर का दौरा किया। उन्होंने बताया कि किसी भी राष्ट्र या समाज की नींव को मज़बूत करने में महिलाओं की विशेष भूमिका होती है। जब तक नारी शिक्षित व जिम्मेवारियों के प्रति जागरूक नहीं होगी तक यह मिशन अधूरा रहेगा। महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति ज़ागरूक होते हुए कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। घर द्वार की चौखट से बाहर निकलना होगा।

हरियाणा पुलिस द्वारा महिलाओं और बेटियों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने के लिए शुरू की गई साइकिल रैली 'जागृति यात्रा' का समापन पंचकूला में पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार अग्रवाल की उपस्थिति में हुआ।

डीजीपी ने महिलाओं की टीम द्वारा सफलतापूर्वक 1,400 किलोमीटर की दूरी तय करने में दिखाए गए समर्पण और जोश की सराहना करते हुए कहा कि हरियाणा पुलिस के इतिहास में यह पहली बार है जब हमारी महिला पुलिस ने इस कठिन कार्य को पूरा किया। उन्होंने कहा कि जिस उद्देश्य को लेकर यह साइकिल यात्रा रवाना की गई थी उस दायित्व को चुनौतियों का सामना करते हुए इन 16 महिला पुलिसकर्मियों ने बख़ूबी निभाया है।

जागृति यात्रा के पीछे हमारा प्राथमिक उद्देश्य राज्य भर में महिलाओं को महिलाओं के खिलाफ़ अपराध की रिपोर्ट करने की आवश्यकता के बारे में ज़ागरूक करके उन्हें सशक्त बनाना था। उन्होंने कहा कि हमारी महिला साइकिल चालकों के प्रयास महिला सुरक्षा एवं सशक्तिकरण की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव लाने में सहायक सिद्ध होंगे।

महिला दस्ते के साथ साइकिल यात्रा शुरू करने का प्रस्ताव तत्कालीन एडीजीपी महिला सुरक्षा श्रीमती कला रामचंद्रन द्वारा दिया गया था। उनका मत था कि इस तरह की साइकिल यात्रा पूरे राज्य में चलाई जानी चाहिए। सफल यात्रा के बाद आने वाले समय में हरियाणा पुलिस द्वारा इस दिशा में और भी कदम उठाए जाएंगें। डीजीपी ने सभी जागृति यात्रा प्रतिभागियों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

प्रतिकूल मौसम के बावजूद 16 पुलिस महिला साइकिल चालकों ने परिश्रम और कर्मठता के बल पर प्रदेशभर में जाते हुए 1,400 किलोमीटर की दूरी तय कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इन साइकिल चालकों ने न केवल सक्रिय रूप से एक गतिविधि आयोजित करने के जुनून को प्रदर्शित किया, बल्कि अन्य महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी क्षमताओं का एहसास करने का भी उदाहरण पेश किया।

- संवाद ब्यूरो

सुण छबीले बोल रसीले

ना दहेज लेणा और ना दहेज देणा

-रसीले, बतावैं सैं किसान आंदोलन समाप्त होग्या?

-हां भाई छबीले आंदोलन खत्म होग्या। कृषि कानून वापस होगे तो फेर आंदोलन का के मतलब रहग्या था। देख्या जा तो यू किमे घणा बड्डा रौला ना था।

-वो क्यूकर भाई?

-देख छबीले, दहेज का कानून पहल्यां भी था और आज भी सै। फेर भी दहेज लेणिये लेवैं सैं और देणिये देवैं सैं। दोनू पक्षां की राजी-रजा हो, तो कोय रौला कोन्या। और जै किसे न कोई आपत्ति हो तै कोर्ट कचहरी में सुणवाई हो सै। दोषी पावैं तो सजा भी होवै सै। यो बात और सै अक ईब इसे-इसे झूठे केस भी होण लाग गे।

कुछ इसै तरियां ये कृषि कानून थे। किसे नै जमीन खुद बोणी होती तो खुद बो लेते, किसे पड़ौसी तैं या किसे कंपनी तैं दामां पै देणी होती, तो दे देते। कोई जबरदस्ती नहीं थी। न्यूए किसे नै मंडी में फसल बेचणी होती या कितो बाहर बेचणी होती, तो उड़ै बेच लेते। कोई जबरदस्ती कोन्या थी, कोय रौला कोन्या था। किसे नै शिकायत होती तो कोर्ट कचहरी जाते, सुणवाई होती।

-बात तो ठीक थी रसीले। खैर बात खत्म, मुद्दा खत्म। ईब विपक्ष आले बड़बड़ाते रहैंगे। वे आपणा राजनीतिक चूल्हा गर्म करने की कोशिश कर रे थे।

- रसीले आजकाल यू दहेज में गाडी लेण का बहुत रौला सुणन में आवै सै।

-भाई यो तो समझ की बात सै। राजी-रजा में तो किमे ले ल्यो और दे द्यो। पर नाराजगी में तै कुछ भी कोन्या। न्यू कहा करैं, इस काले सिर आले कै धाप कोन्या। लालच होगा तो जूत भी बाजैगा, आज नहीं तो कल बाजैगा। ईब न्यू देख निंदाने गाम आले छोरे नै आपणे ब्याह में दहेज के नाम पै कुछ नहीं लिया। बहू नै भी आपणी मोटरसाइकिल पै बिठाकै ल्याया। कोए रौला कोन्या। उसनै दहेज ना लिया, तो कौनसा उसकै टोटा आज्यागा। मान बढ्या, इज्जत बढ़ी। अखबारां में फोटू छप्या।

जिननै गाड्डी मांगी, उनका रौला होया, और इज्जत का कबाड़ा होया। कदे ताहीं का बट्टा लागग्या। पहली बात तो, या सै रसीले। कोय मां बाप आपणी बेटी नै कमती देकै राजी कोन्या। हर कोय आपणी हैसियत तैं ज्यादा देणे की कोशिश करै सै। सवाल यू सै अक इस दहेज तैं के जिंदगी पूरी होज्या सै। जिंदगी बहुत बडी हो सै। ईमानदारी और मेहनत तैं खूब काम करै, एक दूसरे पर बिश्वास करै, और आपस में लाड प्यार तैं रवहै, जिब साफ सुथरी जिंदगी कट्या करै।

- हां भाई, दहेज लेणे के बाद छोरे आल्यां नै बहू और उसके पीहर आल्यां की नजरां में हीणा बणकै रहणा पड़े सै। यानी दबवार रहणा पड़े सै।

-भाई मैं तो न्यू कहूं सूं अक कोय मां-बाप आपणी छोरी नै अनपढ़ ना राखै। पढावै लिखावै। छोरियां नै भी कहूं सूं, खूब पढ़ो-लिखो, कामयाब हो। फेर शादी कराओ। पढ़ी-लिखी बहू के आगै सासरियां की भी इतणी हिम्मत ना होती अक ऊंचे स्वर में बात करै। पड़ौसी भी हिचका करैं।

-रसीले, छोरे आल्यां नै भी समझणी चाहिए अक वे दहेज नै भूलज्यां। जो दहेज लेवै सै उसनै कई गुणा देणा भी पड़े सै। आज नहीं तो कल। तो इसा काम क्यू ना करै अक उम्र भर सिर उठाकै जीवै। सिर झुकाकै जीया तो इसा ए जीया, इसा ए ना जीया।

-हां छबीले, घर के बारणै बैठकै हुक्का तो मेरे बरगे ही पी सकैं सैं, जिसमें कोई खोट नहीं। छोरा भी ब्याहा और छोरी भी ब्याही। ना दहेज लिया और ना दहेज दिया। एक बेटी गई और दूसरी बेटी आगी। और तनै तो बेरा सै, बड्डी बारात ना तो बुलाई और ना आगले कै लेकै गया। हां, गाम में सबका मीठा मुहं जरूर करा दिया।

-रसीले भाई मैं तो न्यू कहूं यो बारात का सिस्टम भी बंद होणा चाहिए। आपणे घर नै चाहे कितणे परिवार बुलाओ, जिमाओ, पर दूसरे के घर आगै छड़दम ना तरवाओ।

-मनोज प्रभाकर

भोजन करें धरती पर अल्थी-पल्थी मार

प्राचीन काल से ही मानव स्वास्थ को लेकर शोध होता रहा है। जिन्हें कहानियों, कविताओं और दोहों से लेकर किताबों व इंटरनेट के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। जिनका लाभ उठाते हुए लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होते हैं। ऐसे प्राचीन दोहे आज की दिनचर्या के लिए उतने ही उपयोगी हैं, जितने सदियों पहले हुआ करते थे। आयुर्वेदाचार्य डॉ. हरिपाल के अनुसार आयुर्वेद को ध्यान में रखकर बनाए गए ये दोहे भले ही किसी ग्रंथ के रूप में न मिलें, लेकिन इनकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है।

प्राचीन स्वास्थ्य दोहावली

पानी में गुड डालिए, बीत जाए जब रात।
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात।
धनिया की पती मसल, बूंद नैन में डार।
दुखती अंखियां ठीक हों, पल लागे दो-चार।
ऊर्जा मिलती है बहुत, पिएं गुनगुना नीर।
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर।
प्रातः काल पानी पिएं, घूंट-घूंट कर आप।
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप।
ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर प्रहार।
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाधार।
भोजन करें धरती पर, अल्थी पल्थी मार।
चबा-चबा कर खाइए, वैद्य न झांकें द्वार।
घूंट-घूंट पानी पियो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी, या मोटापा, होवें चकनाचूर।
अर्थराइज या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रास।
पानी पीजै बैठकर, कभी न आवें पास।
रक्त चाप बढने लगे, तब मत सोचो भाय।
सौगंध राम की खाइ के, तुरत छोड दो चाय।
सुबह खाइये कुवंर-सा, दुपहर यथा नरेश।
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुरेश।
अलसी, तिल, नारियल, घी सरसों का तेल।
यही खाइए नहीं तो, हार्ट समझिए फेल।
पहला स्थान सेंधा नमक, पहाड़ी नमक सुजान।
श्वेत नमक है सागरी, ये है जहर समान।
फल या मीठा खाइके, तुरत न पीजै नीर।
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर।
चोकर खाने से सदा, बढती तन की शक्ति ।
गेहूं मोटा पीसिए, दिल में बढे विरक्ति ।
रोज मुलहठी चूसिए, कफ बाहर आ जाय।
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाय।
भोजन करके खाइए, सौंफ, गुड, अजवान।
पत्थर भी पच जायगा, जानै सकल जहान।

डॉ अमित अग्रवाल, भा.प्र.से. प्रबंध निदेशक, संवाद (सूचना जन संपर्क एवं भाषा विभाग) हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।
कार्यालय : संवाद सोसायटी एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़ फोन : 0172-2723814, 2723812 email : editorsamvad@gmail.com